• प्रार्थनाएँ और गीत •

(संकलनकर्ता)

प्रशान्त अग्रवाल

बरेली, उत्तर प्रदेश

(निवेदन)

यह संकलन है,
उन 84 गीतों/प्रार्थनाओं का,
जो मुझे सर्वाधिक प्रिय अथवा
सर्वाधिक प्रचलित हैं।

इनको संकलित करते समय
प्रचलित त्रुटियों के निवारण
और शुद्ध शब्दावली ही संजोने का
यथासाध्य प्रयत्न किया गया है।
शेष त्रुटियों हेतु अग्रिम क्षमाप्रार्थी हूँ।

आशा है,
पाठकगण इसका यथायोग्य लाभ उठाकर
श्रम को सार्थक करेंगे।

(निवेदक/संकलनकर्ता)
प्रशान्त अग्रवाल, बरेली, उ.प्र.
14.6.2020 ई.

(अनुक्रमणिका)

1. हे गणेश तव पावनचरणौ
2. देवि सरस्वति! तव पदकमलं
3. या कुन्देन्दुतुषारहारधवला
4. हे शारदे माँ हे शारदे माँ
5. लिये कर-कंज में वीणा
6. हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
7. मुझको नवल-उत्थान दो
8. सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु
9. हे ज्ञानरूप भगवन् हमको.....
10. तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो
11. मानवता के मन-मंदिर में
12. ऐ मालिक तेरे बंदे हम
13. इतनी शक्ति हमें देना दाता
14. हमको मन की शक्ति देना
15. वह शक्ति हमें दो दयानिधे
16. दया कर दान भक्ति का
17. तोरा मन दर्पण कहलाये
18. तू प्यार का सागर है
19. ओ पालनहारे
20. रोशन हुई रात
21. तेरी आराधना करूँ
22. लब पे आती है दुआ
23. मेरा आपकी कृपा से
24. मेरा जीवन तेरे हवाले
25. हर देश में तू, हर वेश में तू
26. तू ही राम है, तू रहीम है
27. नैतिकता की सुर सरिता में
28. न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम
29. खुद जियें सबको जीना सिखायें
30. जीवन में कुछ करना है तो
31. मुट्ठी में कुछ सपने लेकर
32. देश हमें देता है सब कुछ
33. विश्व गगन पर फिर से गूँजे
34. हँसते गाते धूम मचाते
35. नयी राह पर चलने वाले
36. क्रांति की मशाल से मशाल को
37. देश है पुकारता तू सो रहा....
38. कि जैसे चाँद आकर चाँदनी के...
39. गिरकर उठना उठकर चलना
40. वीर तुम बढ़े चलो
41. उठो जवान देश की वसुंधरा पुकारती
42. लक्ष्य न ओझल होने पाये
43. हिमाद्रि तुंग शृंग से
44. चंदन है इस देश की माटी
45. बेसिक शिक्षा के हम प्रहरी
46. भारत का स्वर्णिम गौरव...
47. लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
48. वन्दे मातरं
49. भारत वन्दे मातरं
50. निर्माणों के पावन युग में
51. विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
52. हम होंगे कामयाब एक दिन
53. सारे जहां से अच्छा....
54. गंगा तेरा पानी अमृत
55. इंसाफ की डगर पे
56. साथी हाथ बढ़ाना
57. कदम-कदम बढ़ाये जा
58. ताक़त वतन की हमसे है
59. है प्रीत जहाँ की रीत सदा
60. जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया
61. हिंदुस्तान की कसम, न झुकेगा..
62. मत रो माता लाल तेरे बहुतेरे
63. कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथियों
64. हम लाये हैं तूफान से कश्ती निकाल के
65. ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछड़े चमन
66. ऐ मेरे वतन के लोगों, ज़रा आँख में...
67. ऐ वतन ऐ वतन हमको तेरी कसम
68. मेरा रंग दे वसन्ती चोला
69. शान तेरी कभी कम न हो
70. हमारी ही मुट्ठी में आकाश सारा
71. मेरा मुल्क मेरा देश मेरा ये वतन
72. आरम्भ है प्रचण्ड बोले मस्तकों के झुण्ड
73. नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ
74. महामहनीय मेधाविन्
75. मनसा सततं स्मरणीयं
76. शूरा वयं धीरा वयं
77. पदं पदं प्रवर्धते
78. एहि एहि वीर रे
79. प्रकृत्या सुरम्यं
80. मृदपि च चंदनमस्मिन् देशे
81. अवनितलं पुनरवतीर्णा स्यात्
82. सुरस सुबोधा विश्वमनोज्ञा
83. मणिना वलयं वलयेन...
84. जन-गण-मन अधिनायक जय हे

हे गणेश! तव पावनचरणौ
सर्वे वयं सदा प्रणमामः

देहि देव! सद्विद्याम् नस्त्वं
दूरी-कुरु मनसः अज्ञानम्

साञ्जलि-वयं नमस्कुर्मः त्वां
कृत्वा तव पदपद्म ध्यानम्

रक्ष सर्वदा हेरम्ब! त्वं
देव! त्वां शरणं गच्छामः

हे गणेश! तव पावनचरणौ
सर्वे वयं सदा प्रणमामः ।।

मिशन संवाद

देवि सरस्वति! तव पदकमलम्
अहं नमामि वयं नमामः

मातः देहि सद्गुणज्ञानम्
अहं नमामि वयं नमामः

देवि शारदे! तव सन्निकटे
अहं पठामि वयं पठामः

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,
अज्ञानता से हमें तार दे माँ

तू स्वर की देवी है संगीत तुझ से,
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझ से,
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ...

तू श्वेतवर्णी कमल पे विराजे,
हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे,
मन के हमारे मिटा दे अंधेरे,
हमको उजालों का संसार दे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ...

मुनियों ने समझी, गुनियों ने जानी,
वेदों की भाषा, पुराणों की वाणी,
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें,
विद्या का हमको अधिकार दे माँ
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ...

लिये कर-कंज में वीणा, सुभाषी तुम सुहाती हो
विराजो इस हृदय में माँ, मुझे क्यों भूल जाती हो

तुम्हीं हो वेद की माता
तुम्हीं हो ज्ञान की दाता
अकिंचन जानकर मुझको
न अपना क्यों बनाती हो?...
लिये कर-कंज में वीणा.....

पथिक मैं भ्रान्त आकुल-सा
व्यथित अनजान हूँ शिशु-सा
मुझे सद्ज्ञान की लोरी
न तुम अब आ सुनाती हो?...
लिये कर-कंज में वीणा.....

अभय वरदायिनी तुम हो
सकल दुखहारिणी तुम हो
वरद-कर रख न सर पर क्यों
मुझे तुम आ सुलाती हो?...
लिये कर-कंज में वीणा.....

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे, अम्ब विमल मति दे
जग सिरमौर बनायें भारत
वह बल विक्रम दे, वह बल विक्रम दे
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी....

साहस शील हृदय में भर दे
जीवन त्याग-तपोमय कर दे
संयम सत्य स्नेह का वर दे
स्वाभिमान भर दे, स्वाभिमान भर दे
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी....

लव, कुश, ध्रुव, प्रह्लाद बनें हम
मानवता का त्रास हरें हम
सीता, सावित्री, दुर्गा माँ
फिर घर-घर भर दे, फिर घर-घर भर दे
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी....

मुझको नवल उत्थान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

माँ शारदे! हंसासिनी!
वागीश! वीणावादिनी!
मुझको अगम स्वर-ज्ञान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

निष्काम हो मन कामना
मेरी सफल हो साधना
नव गति, नई लय तान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

हो सत्य जीवन-सारथी
तेरी करूँ नित आरती
समृद्धि, सुख, सम्मान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

मन, बुद्धि, हृदय पवित्र हो
मेरा महान चरित्र हो
विद्या, विनय, बल दान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

सौ वर्ष तक जीते रहें
सुख-अमिय हम पीते रहें
निज चरण में सुस्थान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

यह विश्व ही परिवार हो
सबके लिए सम प्यार हो
'आदेश' लक्ष्य महान दो
माँ सरस्वती! वरदान दो

मिशन शिक्षण संवाद

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु,
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगायें हम
विद्या का वरदान तुम्हीं से पायें हम
तुम्हीं से है आगाज तुम्हीं अंजाम प्रभु
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु....

मिशन
संवाद

गुरुओं का सत्कार कभी न भूलें हम
इतना बनें महान गगन को छू लें हम
तुम्हीं से है हर सुबह तुम्हीं से शाम प्रभु
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु......

हे ज्ञान-रूप भगवन, हमको भी ज्ञान दे दो।
करूणा के चार छींटे, करूणा-निधान दे दो॥

सुलझा सकें हम अपनी, जीवन की उलझनों को
प्रज्ञा, ऋतम्भरा सी, बुद्धि का दान दे दो

दाता तुम्हारे दर पर, किस चीज़ की कमी है
चाहो तो निर्धनों को, दौलत की खान दे दो

अपनी मदद हमेशा, खुद आप कर सकें जो
इन बाजुओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो

उपकार भावना से, निर्भीक सत्य वाणी
मीठे ही शब्द बोलें, ऐसी ज़बान दे दो

तुम देवता हो, सबकी बिगड़ी बनाने वाले
जीवन सफल बने जो, थोड़ा सा ध्यान दे दो

डर है प्रभु तुम्हारा, रास्ता न भूल जाएँ
भक्तों की मण्डली में, हमको भी स्थान दे दो

मिशन संवाद

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो

तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे
कोई ना अपना सिवा तुम्हारे
तुम्हीं हो नैय्या, तुम्हीं खेवैय्या
तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता......

जो खिल सके ना, वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं
दया की दृष्टि सदा ही रखना
तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो
तुम्हीं हो माता......

मानवता के मन-मन्दिर में ज्ञान का दीप जला दो
करुणानिधान भगवान् मेरे भारत को स्वर्ग बना दो

दुख-दरिद्रता नाश करो, मानव के कष्ट मिटा दो
अमृत की वर्षा बरसाकर भूख की आग बुझा दो
खेतों में हरियाली भर दो, धान के ढेर लगा दो
करुणानिधान भगवान् मेरे भारत को स्वर्ग बना दो
मानवता के मन-मन्दिर में....

नव प्रभात फिर महक उठे, मेरे भारत की फुलवारी
सब हों एक समान जगत में, कोई न रहे भिखारी
एक बार माँ वसुंधरा को नव शृंगार करा दो
करुणानिधान भगवान् मेरे भारत को स्वर्ग बना दो
मानवता के मन-मन्दिर में....

ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें, और बदी से टलें, ताकि हँसते हुए निकले दम

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेख़बर, कुछ न आता नज़र, सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम, तो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें, ...

बड़ा कमज़ोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके ग़म
नेकी पर चलें, ...

जब ज़ुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई भरें, नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें, ...

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमज़ोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना

दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली ज़िन्दगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...

हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाँटें सभी को, सब का जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करुणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हर एक मन का कोना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...

हर तरफ़ ज़ुल्म है बेबसी है, सहमा-सहमा सा हर आदमी है
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए, जाने कैसे ये धरती थमी है
बोझ ममता का तू ये उठा ले, तेरी रचना का ये अंत हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...

हम अँधेरे में हैं रोशनी दे, खो न दें खुद को ही दुश्मनी से
हम सज़ा पाएं अपने किये की, मौत भी हो तो सह लें ख़ुशी से
कल जो गुज़रा है फिर से न गुज़रे, आनेवाला वो कल ऐसा हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता...

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना ...

भेद-भाव अपने दिल से, साफ़ कर सकें
दूसरों से भूल हो तो, माफ़ कर सकें
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना ...

मुश्किलें पड़ें तो हम पे, इतना कर्म कर
साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर
खुद पे हौसला रहे, बदी से ना डरें
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें
हमको मन की शक्ति देना ...

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर-सेवा पर-उपकार में हम,
जग (निज)-जीवन सफल बना जावें॥

हम दीन-दुखी निबलों-विकलों के,
सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके, भूले-भटके,
उनको तारें खुद तर जावें॥

छल, दंभ-द्वेष, पाखंड-झूठ,
अन्याय से निशिदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम-सुधा रस बरसावें॥

निज आन-बान, मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश-जाति* में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जावें॥

('देश-जाति' की जगह 'देश-राष्ट्र' भी प्रयुक्त होता है।)
(रचनाकार : मुरारीलाल शर्मा 'बालबंधु', जन्म- 1893, मेरठ)

दया कर दान भक्ति का, हमें परमात्मा देना
दया करना, हमारी आत्मा में शुद्धता देना

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ
अंधेरे दिल में आकर के परम ज्योति जगा देना
दया कर, दान भक्ति का ...

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर
हमें आपस में मिलजुल कर, प्रभु रहना सिखा देना
दया कर, दान भक्ति का ...

मिशन शिक्षण संवाद

हमारा धर्म हो सेवा, हमारा कर्म हो सेवा
सदा ईमान हो सेवा, वो सेवकचर बना देना
दया कर, दान भक्ति का ...

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना
वतन पर जां फ़िदा करना, प्रभु हमको सिखा देना
दया कर, दान भक्ति का ...

तोरा मन दर्पण कहलाए, तोरा मन दर्पण कहलाए
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाए
तोरा मन दर्पण कहलाए....

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा ना कोय
मन-उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होय
इस उजले दर्पण पर प्राणी, धूल ना जमने पाए
तोरा मन दर्पण कहलाए....

सुख की कलियाँ, दुख के काँटे, मन सबका आधार
मन से कोई बात छुपे ना, मन के नैन हज़ार
जग से चाहे भाग ले कोई, मन से भाग ना पाए
तोरा मन दर्पण कहलाए....

तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल
तन के कारण, मन के धन को मत माटी में रोल
मन की क़दर भुलानेवाला, हीरा जनम गँवाए
तोरा मन दर्पण कहलाए....

तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तूने, चले जायेंगे जहां से हम
तू प्यार का सागर है ...

घायल मन का पागल पंछी उड़ने को बेक़रार
पंख हैं कोमल, आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
अब तू ही इसे समझा, राह भूले थे कहाँ से हम
तू प्यार का सागर है ...

इधर झूमके गाये ज़िंदगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने, कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे, कि आये कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है ...

ओ पालनहारे निर्गुण और न्यारे, तुम्हरे बिन हमरा कौनो नाहीं
हमरी उलझन सुलझाओ भगवन, तुम्हरे बिन हमरा कौनो नाहीं

तुम्हें हमका हो संभाले
तुम्हें हमरे रखवाले
तुम्हरे बिन हमरा कौनो नाहीं

चंदा में तुम्ह तो भरे हो चाँदनी, सूरज में उजाला तुम्ही से
ये गगन है मगन, तुम्ह तो दिये हो इसे तारे
भगवन ये जीवन!
तुम्ह ना सँवारोगे तो क्या कोई सँवारे
ओ पालनहारे निर्गुण और न्यारे....

जो सुनो तो कहें प्रभुजी हमरी है बिनती
दुखियन को धीरज दो, हारे नहीं वो कभी दुख से
तुम निर्बल को रक्षा दो, रह पाये निर्बल सुख से

भक्ति को शक्ति दो, भक्ति को शक्ति दो
जग के जो स्वामी हो, इतनी तो अरज सुनो
हैं पथ में अँधियारे, दे दो वरदान में उजियारे

ओ पालनहारे निर्गुण और न्यारे, तुम्हरे बिन हमरा कौनो नाहीं
हमरी उलझन सुलझाओ भगवन, तुम्हरे बिन हमरा कौनो नाहीं

रोशन हुई रात, वो आसमां से उतर के ज़मीं पे आया
रोशन हुई रात, मरियम का बेटा मुहब्बत के संदेस लाया

दुनिया में वो मेहरबाँ साथ लाया, सच्चाई के उजाले
दुनिया में बनके मसीहा वो आया, कि हमको दुखों से बचा ले
रोशन हुई रात...

वो आया सीने से उनको लगाने, जो हैं यहाँ बेसहारे
वो आया बाँहों में उनको छुपाने, जो हैं यहाँ ग़म के मारे

रोशन हुई रात, जब जगमगाया, पूरब गगन का सितारा
रोशन हुई रात, हुक़्म-ए-ख़ुदा से मरियम ने यीसु पुकारा
रोशन हुई रात...

तेरी आराधना करूँ, तेरी आराधना करूँ
पाप क्षमा कर, जीवन दे दे, दया की याचना करूँ

तू ही महान्, सर्वशक्तिमान, तू ही है मेरे जीवन का संगीत
हृदय के तार, छेड़े झनकार, तेरी आराधना है मधुर गीत
जीवन से मेरे तू महिमा पाये, एक ही कामना करूँ
पाप क्षमा कर, जीवन दे दे, दया की याचना करूँ

सृष्टि के हर एक कण-कण में, छाया है तेरी ही महिमा का राज
पक्षी भी करते हैं तेरी प्रशंसा, हर पल सुनाते हैं आनंद का राग
मेरी भी भक्ति तुझे ग्रहण हो, हृदय से प्रार्थना करूँ
पाप क्षमा कर, जीवन दे दे, दया की याचना करूँ

पतित जीवन में ज्योति जला दे, तुझ ही से लगी है आशा मेरी
पापमय तन को दूर हटा दे, पूर्ण हो अभिलाषा मेरी
जीवन के कठिन दुखी क्षणों का, दृढ़ता से सामना करूँ
पाप क्षमा कर, जीवन दे दे, दया की याचना करूँ

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी
ज़िन्दगी शम्मा की सूरत हो ख़ुदाया मेरी।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
ज़िन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब
इल्म की शम्मा से हो मुझको मोहब्बत या रब

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्द-मंदों से ज़ईफ़ों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको

(इक़बाल)

मेरा आपकी कृपा से हर काम हो रहा है
करते हैं मेरे भगवन्, मेरा नाम हो रहा है

मांझी बिना ही नइया मझधार चल रही है
माँगे बिना ही खुशियाँ दिन-रात मिल रही हैं
मंगल सदा ही मेरे जीवन में हो रहा है
करते हैं मेरे भगवन्, मेरा नाम हो रहा है

करने लगा हूँ जबसे, भगवन् तुम्हारी भक्ति
दुख-संकटों को सहने की मिल रही है शक्ति
भक्ति के जल से मेरा मन-मैल धुल रहा है
करते हैं मेरे भगवन्, मेरा नाम हो रहा है

छोड़ा है मैंने सब कुछ भगवान के हवाले
आशीष उनका मुझको पग-पग पे है संभाले
राजा भी दर्शनों को कब से तरस रहा है
करते हैं मेरे भगवन्, मेरा नाम हो रहा है

मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु इसे पग-पग तू ही संभाले
पग-पग तू ही संभाले इसे (हो) पग-पग तू ही संभाले

भवसागर में जीवन-नैया, डोल रही है ओ रे खिवैया
इसे आके अब तो बचा ले प्रभु इसे पग-पग तू ही संभाले
मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु.....

मोहमाया के बन्धन खोलो, हे प्रभु अपनी शरण में ले लो
अब मुझको तो अपना ले प्रभु इसे पग-पग तू ही संभाले
मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु.....

ये जीवन है तुझसे पाया, सब तेरे, नहीं कोई पराया
ये जीवन तुझपे है वारे प्रभु इसे पग-पग तू ही संभाले
मेरा जीवन तेरे हवाले प्रभु.....

हर देश में तू, हर वेश में तू
तेरे नाम अनेक, तू एक ही है
तेरी रंग भूमि, यह विश्व-धरा
सब खेल में मेल में तू ही तो है

सागर से उठा, बादल बन के
बादल से गिरा, जल हो कर के
फिर नहर बना, नदिया गहरी
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है

मिट्टी से अणु-परमाणु बना
सब जीव-जगत का रूप लिया
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना
सौन्दर्य तेरा तू एक ही है

यह दिव्य दिखाया है जिसने
वह है गुरुदेव की पूर्ण दया
तुकड्या कहीं और न कोई दिखा
बस मैं और तू सब एक ही हैं

तू ही राम है तू रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ
तू ही वाहे गुरु तू यीशु मसीह, हर नाम में तू समा रहा

तेरी जात पाक कुरान में, तेरा दरस वेद पुराण में
गुरु ग्रंथ जी के बखान में, तू प्रकाश अपना दिखा रहा

अरदास है कहीं कीर्तन, कहीं राम-धुन कहीं आवहन
विधि-भेद का है ये सब रचन, तेरा भक्त तुझको बुला रहा।

विधि वेश जात के नामों से, हमें मुक्त कर दो परमपिता
तुझे देख पाएँ सभी में हम, तुझे ध्या सकें हम सभी जगह।

तू ही ध्यान में, तू ही ज्ञान में, तू ही प्राणियों के प्राण में
कहीं आसुओं में बहा तू ही, कहीं फूल बन के खिला हुआ

तेरे गुण नहीं हम गा सकें, तुझे कैसे मन में ध्या सकें
है दुआ यही तुझे पा सकें, तेरे दर पे सर यह झुका हुआ

"अणुव्रत-गीत"

नैतिकता की सुर सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो - 2

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा
वर्ण, जाति या संप्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन हो
संयममय जीवन हो - 2

मैत्री-भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाए
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो
संयममय जीवन हो - 2

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी
नर हो नारी, बने नीतिमय जीवनचर्या सारी
कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो
संयममय जीवन हो - 2

प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं
प्रामाणिक बनकर ही संकट-सागर तर सकते हैं
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा ही जीवन-दर्शन हो
संयममय जीवन हो - 2

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद सारे जग में पसरेगा
मानवीय आचार संहिता में अर्पित तन-मन हो
संयममय जीवन हो - 2

न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥

सदा जो जगाए बिना ही जगा है
अँधेरा उसे देखकर ही भगा है
वही बीज पनपा, पनपना जिसे था
घुना क्या किसी के उगाए उगा है
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥१॥

सही राह को छोड़कर जो मुड़े हैं
वही देखकर दूसरों को कुढ़े हैं
बिना पंख तौले उड़े जो गगन में
न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं
अगर उड़ सको तो पखेरु बनो तुम
प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥२॥

न जो बर्फ की आँधियों से लड़े हैं
कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं
जिन्हें लक्ष्य से कम अधिक प्यार खुद से
वही जी चुराकर विमुख हो खड़े हैं
अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम
अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी ॥३॥

खुद जियें सबको जीना सिखाएँ
अपनी खुशियाँ चलो बाँट आएँ

कितनी खुशियाँ हैं, दुनिया में देखो
दोनों हाथों से इनको समेटो
आओ खुशियों की फसलें उगाएँ
अपनी खुशियाँ.....

तोड़ लाएँ चलो सब सितारे
आओ जुगनू पकड़ लाएँ सारे
जिससे हर घर में दीपक जलाएँ
अपनी खुशियाँ.....

है बहुत खूबसूरत कहानी
जिसको कहते हैं हम ज़िंदगानी
आओ सब प्यार का गीत गाएँ
अपनी खुशियाँ.....

मिशन शिक्षण संवाद

जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पद चलकर हार गया
धीरे-धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया
चलो कदम से कदम मिलाकर, तुम भी प्यारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो

चलने वाला मंज़िल पाता, बैठा पीछे रहता है
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है
पाँव मिले चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो

धरती चलती तारे चलते, चाँद रात-भर चलता है
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है
हवा चले तो खुशबू बिखरे, तुम भी प्यारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो हिम्मत हारे मत बैठो

मुट्ठी में कुछ सपने लेकर, भरकर जेबों में आशाएं
दिल में है अरमान यही, कुछ कर जाएं, कुछ कर जाएं
सूरज-सा तेज नहीं मुझमें, दीपक-सा जलता देखोगे
अपनी हद रौशन करने से, तुम मुझको कब तक रोकोगे...
तुम मुझको कब तक रोकोगे...।।

मैं उस माटी का वृक्ष नहीं, जिसको नदियों ने सींचा है
बंजर माटी में पलकर मैंने मृत्यु से जीवन खींचा है
मैं पत्थर पर लिखी इबारत हूँ, शीशे से कब तक तोड़ोगे
मिटने वाला मैं नाम नहीं, तुम मुझको कब तक रोकोगे...
तुम मुझको कब तक रोकोगे...।।

इस जग में जितने ज़ुल्म नहीं, उतने सहने की ताकत है
तानों के भी शोर में रहकर सच कहने की आदत है
मैं सागर से भी गहरा हूँ, तुम कितने कंकड़ फेंकोगे
चुन-चुनकर आगे बढ़ूँगा मैं, तुम मुझको कब तक रोकोगे...
तुम मुझको कब तक रोकोगे..।।

झुक-झुककर सीधा खड़ा हुआ, अब फिर झुकने का शौक नहीं
अपने ही हाथों रचा स्वयं, तुमसे मिटने का खौफ़ नहीं
तुम हालातों की भट्टी में जब-जब भी मुझको झोंकोगे
तब तपकर सोना बनूंगा मैं, तुम मुझको कब तक रोकोगे...
तुम मुझको कब तक रोकोगे...।।

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें ॥

सूरज हमें रोशनी देता, हवा नया जीवन देती है ।
भूख मिटाने को हम सबकी, धरती पर होती खेती है ।
औरों का भी हित हो जिसमें, हम ऐसा कुछ करना सीखें ॥

गरमी की तपती दुपहर में, पेड़ सदा देते हैं छाया ।
सुमन सुगंध सदा देते हैं, हम सबको फूलों की माला ।
त्यागी तरुओं के जीवन से, हम परहित कुछ करना सीखें ॥

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ , जो चुप हैं उनको वाणी दें ।
पिछड़ गए जो उन्हें बढ़ाएँ, समरसता का भाव जगा दें ।
हम मेहनत के दीप जलाकर, नया उजाला करना सीखें ॥

विश्व गगन पर फिर से गूँजे, भारत माँ की जय जय जय।
बढ़ते जाएँ हो निर्भय, बढ़ते जाएँ हो निर्भय।।

कालजयी है चिंतन अपना, सभी सुखी हों, एक ही सपना
जगती है परिवार हमारा, चमके अपना शील विनय
बढ़ते जाएँ हो निर्भय, बढ़ते जाएँ हो निर्भय....

अपनी शक्ति को प्रकटाएँ, स्नेहामृत पल-पल छलकाएँ
भेद अभावों को हरना है, मंगलमय नव अरूणोदय
बढ़ते जाएँ हो निर्भय, बढ़ते जाएँ हो निर्भय....

सृष्टि की समझें रचनाएँ, सम्यक विकास-पथ अपनाएँ
वायु, जल, भूमि तत्त्वों को सदा रखेंगे तेजोमय
बढ़ते जाएँ हो निर्भय, बढ़ते जाएँ हो निर्भय....

जीवन-व्रत यह चले अखंडित, तन-मन-धन सर्वस्व समर्पित ,
जगद्गुरु सिंहासन सोहे, गौरव महिमा हो अक्षय
बढ़ते जाएँ हो निर्भय, बढ़ते जाएँ हो निर्भय....

हँसते-गाते धूम मचाते, चलते जायेंगे
हम नन्हें राही... हम नन्हें राही...

हमने कदम बढ़ाया है, अब पीछे नहीं हटायेंगे
मुश्किल कितनी भी आ जायें, उनसे न घबरायेंगे
चीर के तूफानों का सीना बढ़ते जायेंगे
हम नन्हें राही... हम नन्हें राही...

जाति-पाँति की तोड़ दीवारें, सबको गले लगायेंगे
मानवता क्या होती है, हम दुनिया को सिखलायेंगे
प्रेम-अहिंसा का हर दिल में दीप जलायेंगे
हम नन्हें राही... हम नन्हें राही...

मत घबराओ भारत माँ! अब हमें बड़ा होने दो
अपने आँचल में माँ हमको शूरवीर बनने दो
शपथ तेरे चरणों की तेरा कर्ज़ चुकायेंगे
हम नन्हें राही... हम नन्हें राही...

नयी राह पर चलने वाले,
खुली हवा में पलने वाले,
अच्छे बच्चे हम,
हम हैं किससे कम, बोलो, हम हैं किससे कम।

पाँव नहीं, लेकिन अपने पैरों पर खड़े हुए,
हर मुश्किल आसान बनाकर इतने बड़े हुए,
आगे बढ़े कदम, आगे बढ़े कदम,
हम हैं किससे कम, बोलो, हम हैं किससे कम।

हाथ नहीं, पर हम लिख सकते एक नयी गाथा,
जिसके आगे बड़े-बड़ों का झुक जाये माथा,
बाँहों में वह दम, बाँहों में वह दम,
हम हैं किससे कम, बोलो, हम हैं किससे कम।

हमें कुरूप समझने वालों, क्या यह नहीं पता,
मन की सुन्दरता होती है सच्ची सुन्दरता,
तोड़ें सभी भरम, तोड़ें सभी भरम,
हम हैं किससे कम, बोलो, हम हैं किससे कम।

क्रान्ति की मशाल से मशाल को
देश के जवान तू जलाये जा
आँधियों के बीच मुस्कुराए जा
आँधियों के बीच मुस्कुराए जा

लोग जो बड़े निराश हो रहे
मौत की घटाओं में जो सो रहे
इस घटा के साथ-साथ ज़िंदगी ऐ ज़िंदगी
तू भी बिगुल देश के बजाये जा
आँधियों के बीच मुस्कुराए जा

कर प्रणाम तू नये जहान को
कर प्रणाम तू नये विधान को
अराधना के गीत हैं ये गीत हैं ये गीत हैं
तू भी साधना के गीत गाये जा
आँधियों के बीच मुस्कुराए जा

देश है पुकारता तू सो रहा जवान है
देश की तू शान है तू देश की ही आन है

देश में है त्राहि-त्राहि, सुन रहा है तू पड़ा
गाँव में लगी है आग, सुन रहा पड़ा-पड़ा
कोने-कोने भय-अशांति, उठ रहा तूफान है
देश है पुकारता.......

कौन हैं वे लाखों लोग, गाँव-गाँव जाएँगे
भक्ति-गीत सेवा-गीत, मुक्ति-गीत गाएँगे
उनकी कोशिशों से होगा देश प्राणवान ये
देश है पुकारता.......

छोड़ दे ये भेदभाव, तोड़ दे ये रूढ़ियाँ
रूढ़ियों से बंध सकी हैं, कब नवीन पीढ़ियाँ
सब मनुज समान और सबका हक़ समान है
देश है पुकारता.......

तू चला है जब कभी तो आँधियाँ लजा गयीं
सेवा की कदम-कदम पे मंज़िलें सजा गयीं
तेरे इक सही कदम पे झुक गया जहान है
देश है पुकारता.......

मार्ग की मुसीबतों से कब रुकीं जवानियाँ
युग-चुनौतियों के डर से कब झुकीं जवानियाँ
उठ कदम बढ़ा कि तेरी सांस में तूफान है
देश है पुकारता.......

कि जैसे चाँद आकर चाँदनी के फूल बरसाता
कि जैसे मेघ आ सबके घड़ों में नीर भर जाता
करें वैसे ही मेहनत हम, सँवारें रूप भारत का
सँवारें रूप भारत का

कि जैसे भोर का सूरज धरा में रंग भर जाता
कि जैसे फूल खिलकर के हवा में गंध भर जाता
करें वैसे ही मेहनत हम, सँवारें रूप भारत का
सँवारें रूप भारत का

कि जैसे खेत में फसलों का दाना लहलहाता है
कि जैसे काम कर मजदूर गाना गुनगुनाता है
करें वैसे ही मेहनत हम, सँवारें रूप भारत का
सँवारें रूप भारत का

कड़ी मेहनत से ही इंसान का चेहरा चमकता है
कि सोना आग में तपकर ही कुंदन सा दमकता है
करें वैसे ही मेहनत हम, सँवारें रूप भारत का
सँवारें रूप भारत का

मिशन शिक्षण संवाद

गिरकर उठना, उठकर चलना, यह क्रम है संसार का
कर्मवीर को फर्क न पड़ता किसी जीत या हार का
....यह क्रम है संसार का

जो भी होता है घटनाक्रम, रचता स्वयं विधाता है
आज लगे जो दंड वही कल पुरस्कार बन जाता है
निश्चित होगा प्रबल समर्थन अपने सत्य विचार का
कर्मवीर को फर्क न पड़ता किसी जीत या हार का
....यह क्रम है संसार का

कर्मों का रोना रोने से कभी न कोई जीता है
जो विष-धारण कर सकता है वह अमृत को पीता है
संबल और विश्वास हमें है अपने दृढ़ आधार का
कर्मवीर को फर्क न पड़ता किसी जीत या हार का
....यह क्रम है संसार का

त्रुटियों से कुछ सीख मिले तो त्रुटियाँ हो जातीं वरदान
मानव सदा अपूर्ण रहा है पूर्ण रूप होते भगवान
चिंतन-मंथन से पथ मिलता त्रुटियों के परिहार का
कर्मवीर को फर्क न पड़ता किसी जीत या हार का
....यह क्रम है संसार का

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

हाथ में ध्वजा रहे, बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं, दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं, तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

प्रात हो कि रात हो, संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो, चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

एक ध्वज लिये हुए, एक प्रण किये हुए
मातृभूमि के लिये, पितृभूमि के लिये
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

अन्न भूमि में भरा, वारि भूमि में भरा
यत्न कर निकाल लो, रत्न भर निकाल लो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

(द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी)

उठो जवान देश की वसुन्धरा पुकारती
ये देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती

रगों में तेरी बह रहा है, खून राम-श्याम का
जगद्गुरु गोविन्द और राजपूती शान का
तू चल पड़ा तो चल पड़ेगी साथ तेरे भारती
ये देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती

है शत्रु दनदना रहा, चहुँ दिशा में देश की
पता बता रही हमें, किरण-किरण दिनेश की
वो चक्रवर्ती विश्वजयी मातृभूमि हारती
ये देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती

उठा कदम, बढ़ा कदम, कदम-कदम बढ़ाए जा
कदम-कदम पे दुश्मनों के धड़ से सर उड़ाए जा
उठेगा विश्व हाथ जोड़, करने तेरी आरती
ये देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती

उठो जवान देश की वसुंधरा पुकारती
ये देश है पुकारता, पुकारती माँ भारती

लक्ष्य न ओझल होने पाए, कदम मिलाकर चल
मंजिल तेरे पग चूमेगी, आज नहीं तो कल

सबकी दौलत, सबकी मेहनत, सबकी हिम्मत एक
सबकी ताकत, सबकी इज्ज़त, सबकी किस्मत एक
शूल बिछे अगणित राहों में, राह बनाता चल

छोड़ दे नैया अरे खेवैया, मझधार तुम्हारा डेरा
खून-पसीना बहा के अपना, ला फिर नया सवेरा
सीमाओं पर आज मचलता, देशभक्ति का बल

नूतन वेदी बलिदानों की, माँगे आज जवानी
देनी ही हम सबको होगी, देश हेतु कुर्बानी
बलिदानों का ढेर लगे, इतिहास बनाता चल

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़- प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!'

असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के, रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो!

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है॥

हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है॥

जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रम-निष्ठा कल्याणी है।
त्याग और तप की गाथाएँ, गाती कवि की वाणी है॥
ज्ञान जहाँ का गंगा जल सा, निर्मल है अविराम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है॥

इसके सैनिक समर-भूमि में, गाया करते गीता हैं।
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है ॥

(रचनाकार : डॉ. हरगोविंद सिंह)

बेसिक शिक्षा : संकल्प गीत

बेसिक शिक्षा के हम प्रहरी, नींव जमाने वाले
राह ताकती आँखों में उम्मीद जगाने वाले
संघर्षों की तप्त शिला पर बीज उगाने वाले
कंटक-वन को चीर-चीरकर राह बनाने वाले

मासूमों की आँखों में हम कल के दर्शन करते
काम हमारा कितना महती, इसको खूब समझते
धर्म यही संकल्प यही हम ऐसा बाग़ बनाएँ
जिसके फूलों की सुगन्धि से सबके दिल खिल जाएँ

नहीं रखें उम्मीद किसी से, अन्तर्मन में बल है
अच्छी नीयत, करते मेहनत, परमशक्ति सम्बल है
आज नहीं तो कल पायेंगे, लक्ष्य हमें ढूँढ़ेगा
निष्ठा का ओजस्वी ध्वज जब दिग-दिगन्त फहरेगा ।।

(रचयिता : प्रशांत अग्रवाल, बरेली)

भारत का स्वर्णिम गौरव केन्द्रीय विद्यालय लायेगा
तक्षशिला, नालन्दा का इतिहास लौटकर आयेगा

शिक्षा-उपवन के नये फूल
संस्कृति-सरिता के नये कूल
हम ज्योति-दीप जागृत प्रभूत
हट जाओ तम के धूल-शूल

तमसो मा ज्योतिर्गमय, यह मन्त्र विश्व में छायेगा
भारत का स्वर्णिम गौरव केन्द्रीय विद्यालय लायेगा

तन अनेक पर एक प्राण
स्वर अनेक पर एक गान
हम कण-कण पर छा जायेंगे
बनकर भारत का स्वाभिमान

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
तत् त्वं पूषन् अपावृणु
तत् त्वं पूषन् अपावृणु का छन्द ज्योति बरसायेगा
भारत का स्वर्णिम गौरव केन्द्रीय विद्यालय लायेगा

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम
संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

(रचनाकार : सोहनलाल द्विवेदी)

वन्दे मातरम्!
सुजलाम, सुफलाम्
मलयज-शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम्
वन्दे मातरम्

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम्, वरदाम्, मातरम्!
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्

मिशन संवाद

वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
भारत वन्दे मातरम् जय भारत वन्दे मातरम्

रुक ना पाये तूफानों में, सबके आगे बढ़े कदम
जीवन-पुष्प चढ़ाने निकले माता के चरणों में हम ॥

मस्तक पर हिमराज विराजित, उन्नत माथा माता का
चरण धो रहा विशाल सागर, देश यही सुन्दरता का
हरियाली साड़ी पहने माँ, गीत तुम्हारे गाएँ हम ॥१॥

नदियन की पावन धारा है, मंगल माला गंगा की
कमर बन्ध है विंध्याद्रि की, सातपुरा की श्रेनी की
सह्याद्रि का वज्रहस्त है, पौरुष को पहचानें हम ॥२॥

नहीं किसी के सामने हमने अपना शीश झुकाया है
जो हमसे टकराने आया, काल उसी का आया है
तेरा वैभव सदा रहे माँ, विजय ध्वजा फहरायें हम ॥३॥

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें !
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें !!

माना अगम अगाध सिंधु है, संघर्षों का पार नहीं है
किन्तु डूबना मझधारों में साहस को स्वीकार नहीं है
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसन्धान न भूलें !!

शील विनय आदर्श श्रेष्ठता तार बिना झंकार नहीं है
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, यदि नैतिक आधार नहीं है
कीर्ति-कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का सम्मान न भूलें !!

आविष्कारों की कृतियों में यदि मानव का प्यार नहीं है
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है, प्राणी का उपकार नहीं है
भौतिकता के उत्थानों में जीवन का उत्थान न भूलें !!

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा
झण्डा ऊँचा....
स्वतंत्रता के भीषण रण में
लखकर बढ़े जोश क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाये भय संकट सारा
झण्डा ऊँचा....
इस झण्डे के नीचे निर्भय
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलें भारत माता की जय
स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा
झण्डा ऊँचा....
आओ! प्यारे वीरों, आओ
देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ
एक साथ सब मिलकर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा
झण्डा ऊँचा....
इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व-विजय करके दिखलाएं
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झण्डा ऊँचा....

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

होगी शान्ति चारों ओर, होगी शान्ति चारों ओर
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन

हम चलेंगे साथ-साथ, डाले हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन

नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन

सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलिस्तां हमारा

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमां का
वो संतरी हमारा, वो पासबां हमारा

गोदी में खेलती हैं, जिसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिसके दम से, रश्क-ए-जिनां हमारा

मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा

सारे जहां से अच्छा....

मिशन शिक्षण संवाद

गंगा तेरा पानी अमृत, झर-झर बहता जाए
युग-युग से इस देश की धरती तुझसे जीवन पाए

दूर हिमालय से तू आयी, गीत सुहाने गाती
बस्ती-बस्ती, जंगल-जंगल सुख-संदेश सुनाती
तेरी चाँदी जैसी धारा मीलों तक लहराए

कितने सूरज उभरे डूबे गंगा तेरे द्वारे
युगों-युगों की कथा सुनाएँ तेरे बहते धारे
तुझको छोड़ के भारत का इतिहास लिखा न जाए

इस धरती का दुख-सुख तूने अपने बीच समोया
जब-जब देश ग़ुलाम हुआ है, तेरा पानी रोया
जब-जब हम आज़ाद हुए हैं, तेरे तट मुस्काए

खेतों-खेतों तुझसे जागी धरती पर हरियाली
फसलें तेरा राग अलापें, झूमे बाली-बाली
तेरा पानी पीकर मिट्टी, सोने में ढल जाए

तेरे दान की दौलत ऊँचे खलिहानों में ढलती
खुशियों के मेले लगते, मेहनत की डाली फलती
लहक-लहककर धूम मचाते, तेरी गोद के जाए

गूँज रही है तेरे तट पर, नवजीवन की सरगम
तू नदियों का संगम करती, हम खेतों का संगम
यही वो संगम है जो दिल का दिल से मेल कराए

हर हर गंगे कह के दुनिया, तेरे आगे झुकती
तुझी से हम सब जीवन पाएँ, तुझी से पाएँ मुक्ति
तेरी शरण मिले तो मइया, जनम सफल हो जाए

इन्साफ की डगर पे, बच्चों दिखाओ चल के
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के

दुनियां के रंज सहना, और कुछ न मुँह से कहना
सच्चाइयों के बल पे, आगे को बढ़ते रहना
रख दोगे एक दिन तुम, संसार को बदल के
इन्साफ की डगर पे.....

अपने हों या पराये, सब के लिए हो न्याय
देखो कदम तुम्हारा, हरगिज़ न डगमगाये
रस्ते बड़े कठिन हैं, चलना संभल-संभल के
इन्साफ की डगर पे.....

इंसानियत के सर पे, इज़्ज़त का ताज रखना
तन मन की भेंट देकर, भारत की लाज रखना
जीवन नया मिलेगा, अन्तिम चिता में जल के
इन्साफ की डगर पे.....

मिशन शिक्षण संवाद

साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जायेगा मिल कर बोझ उठाना
साथी हाथ बढ़ाना

हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर क़दम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा पर्वत ने शीश झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो पैदा कर दें, चट्टानों में राहें
साथी हाथ बढ़ाना

मेहनत अपनी लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल ग़ैरों की ख़ातिर की, अब अपनी ख़ातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना

शिक्षण संवाद

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई, बन सकता है पर्वत
एक से एक मिले तो इन्सां, बस में कर ले क़िस्मत,
साथी हाथ बढ़ाना

माटी से हम लाल निकालें, मोती लाएँ जल से
जो कुछ इस दुनिया में बना है, बना हमारे बल से
कब तक मेहनत के पैरों में, दौलत की ज़ंजीरें
हाथ बढ़ाकर छीन लो अपने सपनों की तस्वीरें
साथी हाथ बढ़ाना

कदम-कदम बढ़ाए जा, ख़ुशी के गीत गाये जा
ये ज़िन्दगी है कौम की, तू कौम पे लुटाये जा

तेरे लिए तेरे वतन की खाक बेक़रार है
हिमालय की चोटियों को तेरा इंतज़ार है
वतन से दूर है मगर, वतन के गीत गाये जा
ये ज़िन्दगी है कौम की....

बड़ा कठिन सफ़र है ये, बड़े कठिन हैं रास्ते
मगर ये मुश्किलें हैं क्या, सिपाहियों के वास्ते
तू बिजलियों से खेल, आँधियों पे मुस्कुराये जा
ये ज़िन्दगी है कौम की....

बिछड़ रहा है तुझसे तेरा, भाई तो बिछड़ने दे
नसीब कौम का बने, तो अपना घर उजड़ने दे
मिटा के अपना एक घर, हज़ार घर बसाये जा
ये ज़िन्दगी है कौम की....

ताकत वतन की हमसे है
हिम्मत वतन की हमसे है
इज्ज़त वतन की हमसे है
इंसान के हम रखवाले

पहरेदार हिमालय के हम, झोंके हैं तूफ़ान के
सुनकर गरज हमारी सीने फट जाते चट्टान के

सीना है फौलाद का अपना, फूलों जैसा दिल है
तन में विंध्याचल का बल है, मन में ताजमहल है

देकर अपना खून सींचते देश की हम फुलवारी
बंसी से बंदूक बनाते, हम वो प्रेम पुजारी

आकर हमको कसम दे गई, राखी किसी बहन की
देंगे अपना शीश, न देंगे मिट्टी मगर वतन की

खतरे में हो देश अरे तब लड़ना सिर्फ धरम है
मरना है क्या चीज़ आदमी लेता नया जनम है

एक जान है, एक प्राण है, सारा देश हमारा
नदियाँ चल कर थकीं, रुकीं पर, कभी न गंगा धरा

है प्रीत जहाँ की रीत सदा, मैं गीत वहाँ के गाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ

काले-गोरे का भेद नहीं, हर दिल से हमारा नाता है
कुछ और न आता हो हमको, हमें प्यार निभाना आता है
जिसे मान चुकी सारी दुनिया, मैं बात वही दोहराता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ

जीते हो किसी ने देश तो क्या, हमने तो दिलों को जीता है
जहाँ राम अभी तक है नर में, नारी में अभी तक सीता है
इतने पावन हैं लोग जहाँ, मैं नित-नित शीश झुकाता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ, भारत की बात सुनाता हूँ

इतनी ममता, नदियों को भी, जहाँ माता कहके बुलाते हैं
इतना आदर इन्सान तो क्या, पत्थर भी पूजे जाते हैं
उस धरती पे मैंने जनम लिया, ये सोच के मैं इतराता हूँ
भारत का रहने वाला हूँ भारत की बात सुनाता हूँ

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती हैं बसेरा
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा
जहाँ सत्य, अहिंसा और धरम का पग-पग लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा.....
जय भारती.....

ये धरती वो जहाँ ऋषि मुनि जपते प्रभु नाम की माला
हरी ॐ.....
जहाँ हर बालक इक मोहन है और राधा इक-इक बाला
जहाँ सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना घेरा
वो भारत देश है मेरा.....

जहाँ गंगा जमुना कृष्ण और कावेरी बहती जाएँ
जहाँ उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम को अमृत पिलवाएँ
ये अमृत पिलवाएँ
कहीं ये तो फल और फूल उगाएँ, केसर कहीं बिखेरा
वो भारत देश है मेरा.....

अलबेलों की इस धरती के त्योहार भी हैं अलबेले
कहीं दीवाली की जगमग है, होली के कहीं मेले
जहाँ राग-रंग और हँसी-खुशी का चारों ओर है घेरा
वो भारत देश है मेरा.....

जहाँ आसमान से बातें करते मंदिर और शिवाले
किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न ताला डाले
और प्रेम की बंसी जहाँ बजाता आये शाम सवेरा
वो भारत देश है मेरा.....

हिन्दुस्तान की कसम... हिन्दुस्तान की कसम
न झुकेगा सर वतन का, हर जवान की कसम

जिन्हें प्यार है वतन से, वो जां से खेलते हैं
ख्वाबों से खेलते हैं, अरमां से खेलते हैं
मिले राह में जो तूफां, तूफां से खेलते हैं
न रुकेंगे हम किसी से, इस उड़ान की कसम
न झुकेगा सर वतन का .....
हिन्दुस्तान की कसम ....

फिर इम्तिहां न होगा, यूं इम्तिहान देंगे
खायेंगे ज़ख्म हँस के, खुश होके जान देंगे
मिट जायेंगे जुबां पर, हम जब ज़बान देंगे
है इसी में शान अपनी, इसी शान की कसम
न झुकेगा सर वतन का .....
हिन्दुस्तान की कसम ....

दिल होगा जितना घायल, उतना मगन रहेगा
दुनिया को याद अपना, ये बांकपन रहेगा
लहरायेगा तिरंगा, जब तक गगन रहेगा
ये निशान है हमारा, इस निशान की कसम
न झुकेगा सर वतन का .....
हिन्दुस्तान की कसम ....

मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे
जनमभूमि के काम आया मैं, बड़े भाग हैं मेरे
मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे, मत रो

हँसकर मुझको आज विदा कर, जनम सफल हो मेरा
रोता जग में आया, हँसता चला ये बालक तेरा
मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे, मत रो

धूल मेरी जिस जगह तेरी मिट्टी से मिल जाएगी
सौ-सौ लाल गुलाबों की फुलबगिया लहराएगी
मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे, मत रो

कल मैं नहीं रहूँगा लेकिन, जब होगा अँधियारा
तारों में तू देखेगी हँसता एक नया सितारा
मत रो माता, लाल तेरे बहुतेरे, मत रो

फिर जन्मूँगा उस दिन जब आज़ाद बहेगी गंगा
मैया...
उन्नत भाल हिमालय पर जब लहराएगा तिरंगा
मत रो माता....

कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों ३

साँस थमती गई नब्ज़ जमती गई, फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया
कट गये सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं, सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते मरते रहा बाँकपन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो....

ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर, जान देने की रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क़ दोनों को रुसवा करे, वो जवानी जो खूं में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुल्हन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों....

राह क़ुर्बानियों की न वीरान हो, तुम सजाते ही रहना नये क़ाफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है, ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बांध लो अपने सर से कफ़न साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों....

खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर, इस तरफ़ आने पाये न रावण कोई
तोड़ दो हाथ गर हाथ उठने लगे, छूने पाये न सीता का दामन कोई
राम भी तुम तुम्हीं लक्ष्मण साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों....

कर चले हम फ़िदा....

हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के
तुम ही भविष्य हो मेरे भारत विशाल के
इस देश को...

देखो कहीं बरबाद ना होए ये बगीचा
इसको हृदय के खून से बापू ने है सींचा
रक्खा है ये चिराग़ शहीदों ने बाल के
इस देश को...

दुनिया के दांव-पेंच से रखना ना वास्ता
मंज़िल तुम्हारी दूर है, लम्बा है रास्ता
भटका ना दे कोई तुम्हें धोखे में डाल के
इस देश को...

ऐटम बमों के जोर पे ऐंठी है ये दुनिया
बारूद के इक ढेर पे बैठी है ये दुनिया
तुम हर कदम उठाना ज़रा देख-भाल के
इस देश को...

आराम की तुम भूलभुलैया में ना भूलो
सपनों के हिंडोलों पे मगन होके ना झूलो
अब वक़्त आ गया है मेरे हँसते हुए फूलों
उठो छलाँग मार के आकाश को छू लो
तुम गाड़ दो गगन पे तिरंगा उछाल के
इस देश को...

ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछड़े चमन
तुझपे दिल कुर्बान, तू ही मेरी आरज़ू
तू ही मेरी आबरू, तू ही मेरी जान

माँ का दिल बन के कभी सीने से लग जाता है तू
और कभी नन्हीं सी बेटी बन के याद आता है तू
जितना याद आता है मुझको, उतना तड़पाता है तू
तुझपे दिल कुर्बान...

तेरे दामन से जो आए उन हवाओं को सलाम
चूम लूँ मैं उस ज़ुबां को जिसपे आए तेरा नाम
सबसे प्यारी सुबह तेरी, सबसे रंगीं तेरी शाम
तुझपे दिल कुर्बान...

छोड़ कर तेरी गली को दूर आ पहुँचे हैं हम
है मगर ये ही तमन्ना तेरे ज़र्रों की कसम
जिस जगह पैदा हुए थे, उस जगह ही निकले दम
तुझपे दिल कुर्बान...

ऐ मेरे वतन के लोगों..तुम खूब लगा लो नारा
ये शुभ दिन है हम सब का, लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर वीरों ने हैं प्राण गँवाए
कुछ याद उन्हें भी कर लो..जो लौट के घर न आए

ऐ मेरे वतन के लोगों, ज़रा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

जब घायल हुआ हिमालय, खतरे में पड़ी आज़ादी
जब तक थी साँस लड़े वो, फिर अपनी लाश बिछा दी
संगीन पे धर कर माथा, सो गये अमर बलिदानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

जब देश में थी दीवाली, वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में, वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवान वो अपने, थी धन्य वो उनकी जवानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

कोई सिख कोई जाट मराठा, कोई गुरखा कोई मदरासी
सरहद पर मरनेवाला, हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर, वो खून था हिंदुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

थी खून से लथ-पथ काया, फिर भी बन्दूक उठाके
दस-दस को एक ने मारा, फिर गिर गये होश गँवा के
जब अन्त-समय आया तो, कह गए कि अब मरते हैं
खुश रहना देश के प्यारों.. अब हम तो सफ़र करते हैं
क्या लोग थे वो दीवाने, क्या लोग थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

तुम भूल न जाओ उनको, इस लिए कही ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी, ज़रा याद करो क़ुरबानी

जय हिन्द जय हिन्द, जय हिन्द की सेना
जय हिन्द जय हिन्द जय हिन्द..

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी क़सम, तेरी राहों में जां तक लुटा जायेंगे
फूल क्या चीज़ है, तेरे क़दमों पे हम, भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन...

सह चुके हैं सितम, हम बहुत गैर के
अब करेंगे हर एक वार का सामना
झुक सकेगा ना अब सरफरोशों का सर
चाहे हो खूनी तलवार का सामना (2)
सर पे बांधे कफ़न, हम तो हँसते हुए
मौत को भी गले से लगा जायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन....

कोई पंजाब से, कोई महाराष्ट्र से
कोई यूपी से है, कोई बंगाल से
तेरी पूजा की थाली में लायें हैं हम
फूल हर रंग के, आज हर डाल से (2)
नाम कुछ भी सही, पर लगन एक है
जोत से जोत दिल की जगा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन....

तेरी जानिब उठी जो कहर की नज़र
उस नज़र को झुका के ही दम लेंगे हम
तेरी धरती पे है जो क़दम गैर का
उस क़दम का निशां तक मिटा देंगे हम (2)
जो भी दीवार आयेगी अब सामने
ठोकरों से उसे हम गिरा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन....

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देशवालों तुम आँसू बहाना नहीं
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं
लौटकर आ सके ना जहां में तो क्या
याद बन के दिलों में तो आ जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन....

मेरा रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे
मेरा रंग दे बसंती चोला ओये, रंग दे बसंती चोला
माये रंग दे बसंती चोला

दम निकले इस देश की खातिर, बस इतना अरमान है
एक बार इस राह में मरना, सौ जन्मों के समान है
देख के वीरों की क़ुरबानी, अपना दिल भी बोला
मेरा रंग दे बसंती चोला...

जिस चोले को पहन शिवाजी, खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झाँसी की रानी, मिट गई अपनी आन पे
आज उसी को पहन के निकला, पहन के निकला
आज उसी को पहन के निकला, हम मस्तों का टोला
मेरा रंग दे बसंती चोला...

शिक्षण
संवाद

शान तेरी कभी कम न हो, ऐ वतन मेरे वतन मेरे वतन
आन तेरी कभी कम न हो, ऐ वतन मेरे वतन मेरे वतन

हम तराने तेरे प्यार के मरते-मरते भी गाते रहे
तेरे दीपक की लौ कम न हो, इसलिए खूं बहाते रहे
तेरी धरती को चूमे गगन, ऐ वतन मेरे वतन मेरे वतन

तेरे आशिक दुआ कर चले, हुस्न तेरा दमकता रहे
सर हमारा रहे न रहे, तेरा माथा चमकता रहे
तेरा महके हमेशा चमन, ऐ वतन मेरे वतन मेरे वतन

शान तेरी कभी कम न हो, ऐ वतन मेरे वतन मेरे वतन

हमारी ही मुट्ठी में आकाश सारा
जब भी खुलेगी चमकेगा तारा
कभी ना ढले जो, वो ही सितारा
दिशा जिससे पहचाने संसार सारा

हथेली पे रेखाएँ हैं सब अधूरी
किसने लिखी हैं, नहीं जानना है
सुलझाने उनको न आएगा कोई
समझना है उनको, ये अपना करम है
अपने करम से दिखाना है सबको
खुद का पनपना, उभरना है खुद को
अँधेरा मिटाए जो नन्हा शरारा
दिशा जिससे ...

हमारे पीछे कोई आये न आये
हमें ही तो पहले पहुँचना वहाँ है
जिन पर हैं चलना नयी पीढ़ियों को
उन्हीं रास्तों को बनाना हमें है
जो भी साथ आये, उन्हें साथ ले ले
अगर ना कोई साथ दे तो अकेले
सुलगा के खुद को, मिटा ले अँधेरा
दिशा जिससे ...

मिशन शिक्षण संवाद

मेरा मुल्क, मेरा देश, मेरा ये वतन
शांति का, उन्नति का, प्यार का चमन
इसके वास्ते निसार है, मेरा तन, मेरा मन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जानेमन, जानेमन, जानेमन

इसकी मिट्टी से बने तेरे मेरे ये बदन
इसकी धरती तेरे मेरे वास्ते गगन
इसने ही सिखाया हमको जीने का चलन
जीने का चलन..
इसके वास्ते निसार है, मेरा तन, मेरा मन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जानेमन, जानेमन, जानेमन

अपने इस चमन को स्वर्ग हम बनायेंगे
कोना-कोना अपने देश का सजायेंगे
जश्न होगा ज़िन्दगी का, होंगे सब मगन
होंगे सब मगन..
इसके वास्ते निसार है, मेरा तन, मेरा मन
ऐ वतन, ऐ वतन, ऐ वतन
जानेमन, जानेमन, जानेमन

मिशन शिक्षण संवाद

आरम्भ है प्रचण्ड, बोले मस्तकों के झुंड
आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो
आन बान शान या कि जान का हो दान
आज इक धनुष के बाण पे उतार दो
आरम्भ है प्रचण्ड...

मन करे सो प्राण दे, जो मन करे सो प्राण ले
वही तो एक सर्वशक्तिमान है
विश्व की पुकार है, ये भागवत का सार है
कि युद्ध ही तो वीर का प्रमाण है
कौरवों की भीड़ हो या पांडवों का नीड़ हो
जो लड़ सका है वो ही तो महान है
जीत की हवस नहीं, किसी पे कोई वश नहीं
क्या ज़िन्दगी है ठोकरों पे मार दो
मौत अंत है नहीं, तो मौत से भी क्यों डरें
ये जा के आसमान में दहाड़ दो
आरम्भ है प्रचण्ड...

वो दया का भाव, या कि शौर्य का चुनाव
या कि हार का वो घाव, तुम ये सोच लो
या कि पूरे भाल पर जला रहे विजय का लाल
लाल ये गुलाल तुम ये सोच लो
रंग केसरी हो या मृदंग केसरी हो या कि
केसरी हो ताल तुम ये सोच लो
जिस कवि की कल्पना में, ज़िन्दगी हो प्रेम गीत
उस कवि को आज तुम नकार दो
भीगती मसों में आज, फूलती रगों में आज
आग की लपट का तुम बघार दो
आरम्भ है प्रचण्ड...

नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ
बोलो मेरे संग जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद...

रस्ते में चलूँगा न डर-डर के
चाहे मुझे जीना पड़े मर-मर के
मंज़िल से पहले ना लूँगा कहीं दम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने-बाएँ, दाहिने-बाएँ, थम
नन्हा मुन्ना...

धूप में पसीना मैं बहाऊँगा जहाँ
हरे-हरे खेत लहराएँगे वहाँ
धरती पे फ़ाके न पाएँगे जनम
आगे ही आगे...

नया है ज़माना मेरी नई है डगर
देश को बनाऊँगा मशीनों का नगर
भारत किसी से रहेगा नहीं कम
आगे ही आगे...

बड़ा हो के देश का सहारा बनूँगा
दुनिया की आँखों का तारा बनूँगा
रक्खूँगा ऊँचा तिरंगा परचम
आगे ही आगे...

शांति की नगरी है मेरा ये वतन
सबको सिखाऊँगा मैं प्यार का चलन
दुनिया में गिरने न दूँगा कहीं बम
आगे ही आगे...

स्वागत-गीतम्

महामहनीय मेधाविन् , त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।
गुरो गीर्वाणभाषायाः , त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।।

दिनं नो धन्यतममेतत् , इयं मङ्गलमयी वेला।
वयं यद् बालका एते , त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।।

न काचिद् भावना भक्तिः , न काचित् साधना शक्तिः।
परं श्रद्धा-कुसुमाञ्जलिभिः , त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।।

किमधिकं ब्रूमहे श्रीमन् , निवेदनमेतदेवैकम् ।
न बाला विस्मृतिं नेयाः , त्वदीयं स्वागतं कुर्मः।।

(श्रीवासुदेवद्विवेदी शास्त्री)

मनसा सततम् स्मरणीयम्
वचसा सततम् वदनीयम्
लोकहितम् मम करणीयम् ॥

न भोग भवने रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशम् जागरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम् ॥१॥

न जातु दुःखम् गणनीयम्
न च निज सौख्यम् मननीयम्
कार्य क्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम् ॥२॥

दुःख सागरे तरणीयम्
कष्ट पर्वते चरणीयम्
विपत्ति विपिने भ्रमणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम् ॥३॥

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धु जना ये स्थिता गह्वरे
तत्र मया संचरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम् ॥४॥

शूरा वयं धीरा वयं वीरा वयं सुतराम्।
गुणशालिनो बलशालिनो जयगामिनो नितराम्॥

दृढमानसा गतलालसा प्रियसाहसा सततम्।
जनसेवका अतिभावुका शुभचिन्तका नियतम्॥१॥

धनकामना सुखवासना न च वन्चना हृदये।
ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये॥२॥

गतभीतयो धृतनीतयो दृढशक्तयो निखिलाः।
यामो वयं समराङ्गणं विजयार्थिनो बाला॥३॥

जगदीश हे परमेश हे सकलेश हे भगवन्।
जयमङ्गलं परमोज्ज्वलं नो देहि परमात्मन।।४।।

प्रयाण गीतम्

(संस्कृत गीत)	(हिंदी अनुवाद)
पदं पदं प्रवर्धते,	जय की कामना से युक्त,
किशोर गुल्म सैनिकः	विजय के गीत गाने वाले
जयत्व कामनायुतः	किशोर सैन्यदल सैनिक
विजेतृगीत गायकः	कदम-कदम बढ़ाते हैं।
स्वतंत्रता प्रवर्तकः	ये स्वाधीनता के प्रवर्तक हैं,
स्वतंत्रदेश रक्षकः	स्वाधीन देश के रक्षक हैं,
स्वतंत्रता-सुवर्ण-जन्य	स्वाधीनता के सुवर्ण से उत्पन्न
वर्ण-मोद-वर्धकः	आनंद को बढ़ाने वाले हैं।
अशोक चक्र शोभितः	अशोक चक्र से सुशोभित
करे ध्वजः त्रिवर्णकः	तिरंगा ध्वज इनके हाथों में है,
हृदि प्रतापवीरता	हृदय में राणाप्रताप की वीरता है
अदम्य साहसान्वितः	और ये अदम्य साहस से युक्त हैं।
न मार्गरोधने क्षमाः	इनका रास्ता रोकने में
समुद्र-पर्वतादिकाः	समुद्र-पर्वत आदि भी सक्षम नहीं,
समस्त-वैरि-नाशकः	सारे शत्रुओं का विनाश करने वाले
यथा सुवीर सायकः	ये पराक्रमी धनुर्धर हैं।

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे

त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजे
भारतीय-संस्कृतिं
मानसे सदा धरेः

पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत्

प्रकृत्या सुरम्यं विशालं प्रकामं
सरित्तारहारैः ललामं निकामम्
हिमाद्रिर्ललाटे पदे चैव सिन्धुः
प्रियं भारतं सर्वथा दर्शनीयम्

धनानां निधानं धरायां प्रधानं
इदं भारतं देवलोकेन तुल्यम्
यशो यस्य शुभ्रं विदेशेषु गीतं
प्रियं भारतं तत्सदा पूजनीयम्

अनेके प्रदेशाः अनेके च वेशाः
अनेकानि रूपाणि भाषा अनेकाः
परं यत्र सर्वे वयं भारतीयाः
प्रियं भारतं तत्सदा रक्षणीयम्

संवाद

सुधीरा जना यत्र युद्धेषु वीराः
शरीरार्पणेनापि रक्षन्ति देशम्
स्वधर्मानुरक्ताः सुशीलाश्च नार्यः
प्रियं भारतं तत्सदा श्लाघनीयम्

वयं भारतीयाः स्वभूमिं नमामः
परं धर्ममेकं सदा मानयामः
यदर्थं धनं जीवनं चार्पयामः
प्रियं भारतं तत्सदा वन्दनीयम्
(कविवर्य- डॉ. चन्द्रभानु त्रिपाठी)

मृदपि च चन्दनमस्मिन् देशे ग्रामो ग्राम: सिद्धवनम्।
यत्र च बाला देवीस्वरूपा बाला: सर्वे श्रीरामा:॥

हरिमन्दिरमिदमखिलशरीरम् धनशक्ती जनसेवायै
यत्र च क्रीडायै वनराज: धेनुर्माता परमशिवा
नित्यं प्रात: शिवगुणगानं दीपनुति: खलु शत्रुपरा
यत्र.....

भाग्यविधायि निजार्जितकर्म यत्र श्रम: श्रियमर्जयति
त्यागधनानां तपोनिधीनां गाथां गायति कविवाणी
गंगाजलमिव नित्यनिर्मलं ज्ञानं शंसति यतिवाणी
यत्र.....

यत्र हि नैव स्वदेहविमोह: युद्धरतानां वीराणाम्
यत्र हि कृषक: कार्यरत: सन् पश्यति जीवनसाफल्यम्
जीवनलक्ष्यं न हि धनपदवी यत्र च परशिवपदसेवा
यत्र.....

अवनितलं पुनरवतीर्णा स्यात् संस्कृत गंगाधारा
धीरभगीरथवंशोस्माकं वयं तु कृत निर्धारा।।

निपततु पण्डित हरशिरसि, प्रवहतु नित्यमिदं वचसि
प्रविशतु वैयाकरणमुखं, पुनरपिवहताज्जनमनसि
पुत्र सहस्रं समुद्धृतं स्यात यान्तु च जन्मविकारा
धीरभगीरथवंशोस्माकं वयं तु कृत निर्धारा।।

ग्रामं-ग्रामं गच्छाम, संस्कृत शिक्षां यच्छाम
सर्वेषामपि तृप्तिहितार्थं स्वक्लेशं नहि गणयेम
कृते प्रयत्ने किं न लभेत एवं सन्ति विचारा:
धीरभगीरथवंशोस्माकं वयं तु कृत निर्धारा।।

या माता संस्कृतिमूला, यस्या: व्याप्ति: सुविशाला
वांग्मयरूपा सा भवतु, लसतु चिरं सा वांग्माला
सुरवाणीं जनवाणी कर्तुं यतामहे कृतशूरा:
धीरभगीरथवंशोस्माकं वयं तु कृत निर्धारा।।

सुरससुबोधा विश्वमनोज्ञा
ललिता हृद्या रमणीया
अमृतवाणी संस्कृतभाषा
नैव क्लिष्टा न च कठिना

कविकोकिल-वाल्मीकि-विरचिता
रामायणरमणीय कथा
अतीव-सरला मधुरमंजुला
नैव क्लिष्टा न च कठिना

व्यासविरचिता गणेशलिखिता
महाभारते पुण्यकथा
कौरव - पाण्डव -संगरमथिता
नैव क्लिष्टा न च कठिना

मिशन शिक्षण संवाद

कुरूक्षेत्र-समरांगण - गीता
विश्ववन्दिता भगवद्गीता
अमृतमधुरा कर्मदीपिका
नैव क्लिष्टा न च कठिना

कविकुलगुरू - नव - रसोन्मेषजा
ऋतु - रघु - कुमार - कविता
विक्रम - शाकुन्तल - मालविका
नैव क्लिष्टा न च कठिना

मणिना वलयं वलयेन मणि:
मणिना वलयेन विभाति कर: ।
कविना च विभु: विभुना च कवि:
कविना विभुना च विभाति सभा

पयसा कमलं कमलेन पय:
पयसा कमलेन विभाति सर: ।
शशिना च निशा निशया च शशि:
शशिना निशया च विभाति नभ:

(अर्थ)

मणि से कंगन और कंगन से मणि शोभित होता है,
कंगन और मणि दोनों से हाथ शोभित होता है।
कवि से राजा और राजा से कवि शोभा पाता है,
राजा और कवि दोनों से सभा शोभित होती है।

पानी से कमल और कमल से पानी शोभित होता है,
पानी और कमल दोनों से तालाब शोभित होता है।
चन्द्रमा से रात और रात से चन्द्रमा शोभित होता है,
चन्द्रमा और रात दोनों से आकाश शोभित होता है।

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता

पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग

तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष माँगे
गाहे तव जय गाथा

जन-गण मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे